साप्ताहिक http://berartimes.com

बेरार टाईम्स

मुख्य संपादक :- खेमेंद्र कटरे, जाहिरात समन्वयक-महेंद्र बिसेन

आर.एन.आय.क्र. एमएएचएमएआर/२०११/४६५१० | वर्ष -१५ | गोंदिया | विशेष अंक शुक्रवार, दि.२३ जानेवारी २०२६ | पृष्ठ-४ किंमत-३ रुपये | Postal Reg.No.NPMFL/104/2025-2027

चक्रवर्ती राजाभोज जयंती महोत्सव,महारॅली आज

गोंदिया :- क्षत्रिय पोवार राजाभोज जयंती महोत्सव व वसंत पंचमी उत्सव समिती गोंदियाच्या वतीने क्षत्रिय पोवार राजाभोज यांच्या जयंतीनिमित्त महारॅलीचे आयोजन २३ जानेवारी रोजी करण्यात आले आहे.

महारॅलीचे उद्घाटन पोवार महासभा अध्यक्ष नंदलाल चौधरी यांच्या हस्ते आ.विजय रहांगडाले यांच्या अध्यक्षतेखाली करण्यात येणार आहे. यावेळी अतिथी म्हणून माजी जि.प.अध्यक्ष पंकज रहांगडाले, जि.प.बांधकाम सभापती लक्ष्मण भगत, माजी सभापती संजयसिंह टेंभरे, अर्पण बिसेन, राजेन्द्र बिसेन, विशाल बिसेन, भालचंद ठाकुर, केसरबाई बिसेन, दारासिंग कटरे, नेतराम कटरे, डॉ.प्रशांत कटरे, मोतीलाल चौधरी, माणिकचंद बिसेन, संदिप बघेले, केतन तुरकर, विशाल बिसेन, रेखलाल टेंभरे, डॉ.अजय पारधी, गुरूवेश येळे, पृथ्वीराज रहांगडाले, नंदुभाऊ बिसेन, कमलेश बिसेन, राहुल बिसेन, बाळकृष्ण पटले, नरेन्द्र ठाकरे आदि मान्यवर उपस्थित राहणार आहेत.

महारॅलीची सुरूवात जयस्तंभ चौक येथून होणार आहे. रॅली जयस्तंभ चौक ते गांधी प्रतिमा, चांदणी चौक, दुर्गा चौक, गोरेलाल चौक, नेहरू चौक येथे समापन होणार आहे. महारॅलीत मोठ्या संख्येने समाजबांधवानी सहभागी व्हावे, असे आवाहन आयोजन समितीचे अध्यक्ष राजकुमार (पप्पु) पटले, सचिव देवचंद बिसेन, प्रविण बिसेन, उमेश पारधी, श्यामबाबा पटले, संजय ठाकरे, आनंद पटले, प्रकाश टेंभरे, प्रवेश बिसेन, मनीष बोपचे, पिंटू ठाकुर, सचिन रहांगडाले, भुमेश्वर पारधी, नितिन कोल्हे आदिंसह समितीचे पदाधिकारी व सदस्यांनी केले आहे.

संपादकीय

शुरवीर न्यायप्रिय राजाभोज

मालव चक्रवर्ती सम्राट भोज मध्ययुगीन भारत के इतिहास में सम्राट अशोक तथा विक्रमादित्य के समान महाप्रतापी, शूरवीर, कुशल शासक, विद्वान, कवि, दानी, ज्ञानी, न्यायी, धार्मिक, सदाचारी, विद्वानों का आश्रयदाता, ज्ञान–विज्ञान, कला, साहित्य, संस्कृति का पुरस्कर्ता, एवमब लोक सुख–समृद्धि हेतु सदैव कार्यरत, सुरक्षा दक्ष तथा प्रजा में अगाध लोकप्रिय अद्वितीय आदर्श चक्रवर्ती राजा हुआ ।

भोज इतना महान व्यक्तित्व का बलाढ्य धनी था कि उसे अनेक उपाधियों से अलंकृत किया गया था जैसे महाधिराज परमेश्वर, परम भट्टारक महाधिराज परमेश्वर, मालवमण्डन, सार्वभौम, मालवचक्रवर्ती, अवन्तिनायक, धारेश्वर, निर्वाणनारायण, त्रिभुवननारायण,लोकनारायण, विदर्भराज, अहिराज, अहिंद्र, अभिनवार्जुन, कृष्ण, रणरंगमल्ल, आदित्यप्रताप, चाणक्यमाणिक्य, कविराज आदि करीबन ८४ उपाधियाँ डॉ. श्री. वी. वेंकटाचलमब ने धार स्टेट गजेटियर पृ. १०७ पर उल्लेखित की हैं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्व. श्री. पं. जवाहरलाल नेहरु ने भी अपनी जग–विख्यात रचना मडिस्कवरी ऑफ इंडियाफ में धाराधिश राजा भोज को मध्ययुगीन भारत का महान राजा निरुपित किया है।

भोज को भोज, भोजदेव, भोजराज, भोजपति, नरेंद्र, आदि नामों से संबोंधित किया गया है। पं. राजवल्लभ कृत मभोजचरितफ में भोज का जन्म माघ शुल्क ५ (बसंत पंचमी) को संवतब १०३७ (ई. ९८०) में अंकित है। वह पिता मालवाधिश सिंधुलराजदेव तथा माता महारानी सावित्री देवी का ज्येष्ठ पुत्र था तथा वाक्पति मुंजदेव का भतिजा था। भोज की विमाता रत्नावली, शशिप्रभा आदि थी। भोज के लघु भ्राता का नाम दुशल या उत्पलदेव था जो किराड राज्य का स्वतंत्र राजा बना। भोज की पत्नी महारानी लीलावती तथा अन्य पत्नियाँ सत्यवती, मदनमंजरी, भानुमती, पिंगला, सुभद्रा आदि थी। भोज के तीन पुत्र थे जयसिंह, देवराज तथा वत्सराज तथा दो पुत्रियाँ–राजमति एवं भानुमति थी। भोज की पत्नी, महारानी लीलावती महान कवियत्री तथा गणितज्ञ थी एवं राजदरबार में महाकवी कालीदास को कई बार शास्त्रार्थ वाद–विवाद में हरा चुकी थी।

भोज सभी प्रकार के शस्त्र तथा शास्त्रों में निपुन था । उसने राजा मुंजदेव (ताऊ) तथा राजा सिंधुलराजदेव (पिता) के काल में शुरवीर सेनानी तथा विद्वान कवि के रूप में ख्याति पाई थी। किसी समय महाराजा मुंज के दरबार में एक ज्योतिषी आया तथा उसने भोज की जन्म कुंडली देखकर बतलाया कि हे राजन, सुनोः–

पंचाशत्पंचवर्षाणि सप्त मास दिनत्रयमब। भोजराजेन भोक्तव्या सगौडो दक्षिणपथः ।।

अर्थातब ५५ वर्ष, ७ माह ३ दिन गौड़ बंगाल सहित दक्षिण दिशा का राज्य भोजराज भोगेगा।

मुंज के मृत्यू पश्चात राजा सिंधुलराज मालवा नृपति बने। राजा सिंधुलराजदेव ने अपनी वृद्धावस्था के कारण अपना राजसिंहासन अपने मेधावी ज्येष्ठ पुत्र भोजदेव को सौपकर स्वयं तपस्या करने वन में चला गया। इस वक्त भोज केवल २० वर्ष आयु का किशोर था। इतिहासकारों के अनुसार भोज मालवा राजसिंहासन पर मार्गशीर्ष वदी १०, संवत १०५६ (१०००ई.) दिन आरुढ़ हुआ।

प्रारम्भ में भोज को अपने परिजन दुश्मनों से संघर्ष करना पड़ा। मुंजदेव के दोनो पुत्र आबु तथा जालौर के स्वतंत्र राजा होने के पश्चात भोज ने चेदीश्वर, इन्द्ररथ, भीम, तोग्गल, चालुक्य, कर्णाट, लाट, तुरुक, गांगेयदेव आदि अनेक राजाओं को युद्ध में हराकर मालवा राज्य की सीम एं चारो दिशाओं में विस्तृत की। अपनी राजधानी उज्जैन से धारा नगरी स्थलांतर की।

भोज का विजय अभियान राजा भोज सिंहासनारूढ होते ही कल्याणी के चालुक्यों से प्रतिशोध लेने के लिये सज्ज हो गये। राजा भोज ने कल्याणी पर आक्रमण किया, इस युद्ध में कलचुरी शासक गांगेय देव और दक्षिण के चोल राजा राजेन्द्र ने भोज का साथ दिया । कल्याणी के चालुक्य पर विजय, भोज की पहली विजय और पहला सैनिक अभियान था।

कोंकण और लाट प्रदेश पर चालुक्यों के ही सामन्तों का आधिपत्य था । इसलिये भोज का द्वितीय सैनिक अभियान कोंकण और लाट प्रदेश के लिये हुआ। यहाँ भी राजा भोज को विजयश्री मिली। लाट प्रदेश में राजा भोज ने अपने सामन्त यशोवर्मा को पदस्थ कर दिया। राजा भोज ने आदिनगर (उड़ीसा) के सोमवंशी राजा इन्द्ररथ को पराजित कर उसे अपना अधीनस्थ बना लिया।

राजनीति के रिश्ते स्थायी नहीं होते। मित्रता एवं शत्रुता व्यक्तिगत लाभ–हानि एवं स्वार्थ से बदलती रहती है। दक्षिण की विजय यात्रा में कलचुरि शासक गांगेयदेव ने भोज का साथ दिया था किन्तु भोज ने कलचुरि शासक गांगेय देव के चेदि प्रदेश पर भी आक्रमण कर दिया । ऐसा लगता है कि भोज गांगेय देव की बढ़ती हुई शक्ति से सशंकित था। गांगेय देव ने प्रतिहारों के पतन से लाभ उठाते हुये उनके बनारस के क्षेत्र पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था। अब वह प्रतिहारों के प्रमुख केन्द्र कन्नौज के क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने की योजना बना रहा था। राजा भोज की भी दृष्टि प्रतिहारों के उसी क्षेत्र पर लगी हुई थी। इसलिये प्रारम्भ में ही भोज ने कलचुरी नरेश पर आक्रमण कर उसकी शक्ति क्षीण कर दी जिससे वह कन्नौज की ओर न जा सके । विजयश्री ने भोज का साथ दिया। इस लडाई के बाद कहां राजा भोज और कहां गांगेय तैलप यह कहावत मशहूर हुई।

कन्नौज से संलग्न क्षेत्रों पर आधिपत्य स्थापित करने के लिए भोज अत्याधिक लालायित था। रास्ते में जेजाकभुक्ति के सशक्त विद्याधर चन्देल का राज्य था। ग्वालियर के कछवाहे विद्याधर के करढ़ सामन्त थे। भोज विद्याधर चन्देल से नहीं टकराना चाहता था क्योंकि उसकी शक्ति से वह परिचित था। इसलिये भोज ने ग्वालियर और दूबकुंड को अपना शिकार बनाना चाहा, क्योंकि इस राह से भी कन्नौज पहुंचा

जा सकता था। ग्वालियर पर आक्रमण हो गया। भोज पराजित हो गये। यह उनके जीवन की पहली असफलता थी। संभव है विद्याधर ने अपने सामन्तों की सहायता की हो जो उसका धर्म था। विद्याधर के एक अभिलेख में भोज का श्रीहीन होना अंकित है, जिससे लगता है कि विद्याधर ने अपने सामन्तों की सहायता की थी। इसी बिच विद्याधर का निधन हो गया। जेजाकभुक्ति की चन्देल सत्ता चरमराने लगी। चन्देल सत्ता के पराभव के साथ ही ग्वालियर के कछवाहा सामन्त ने चन्देल सत्ता की सामन्ती छोड़कर भोज की सामन्ती ग्रहण कर ली। भोज के लिये कन्नौज की राह साफ हो गई। उचित अवसर देखकर भोज ने कन्नौज पर आक्रमण कर दिया और वह कान्यकुब्ज के कुछ क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने में सफल भी हो गया। इसी के साथ उत्तरप्रदेश के कुछ अन्य क्षेत्रों पर भी भोज ने अपनी सत्ता स्थापित कर ली।

भोज का अन्तिम सैन्य अभियान अनहिलवाड़ा के चालुक्य भीम के विरूद्ध हुआ । यद्यपि भीम और भोज में मित्रता थी, किन्तु भोज ने मित्रता की अनदेखी करते हुये अनहिलवाड़ा पर उस समय आक्रमण किया जब भीम किसी सैन्य अभियान में अपनी राजधानी से बाहर था। इस सैन्य अभियान का नेतृत्व भोज ने नहीं किया था, वरनब उनके सेनापति कुलचंद्र ने किया था। भीम की अनुपस्थिति में उसकी राजधानी असुरक्षित हो गई थी और बड़ी सरलता से मालवा की सेना ने उसे खूब लूटा और ध्वस्त किया और कुलचंद्र की

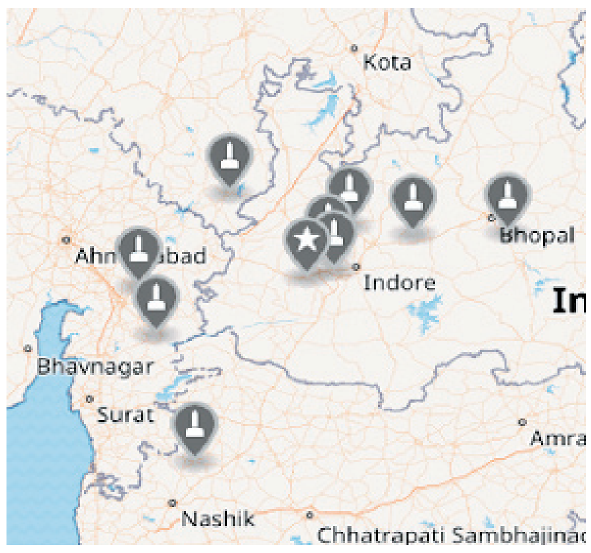

लूट यह किवदन्ति बन गई। भीम ने सक्षम होते हुये भी प्रतिशोध में भोज के विरुद्ध अप्रिय कार्य नहीं किया।

अंततया, भोज का विक्रम संवत १०७८ (१०२१ ई.) में मात्र २०वर्षो बाद, ४०–४१ वर्ष की आयु में "मालवसम्राट परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर त्रिभुवन चक्रवर्ती" के सर्वोच्च सर्वभौम पद पर राजतिलक हुआ (शुभशील भोजप्रबंध). भोज ने अपने सेनापति कुलचंद्र तथा सुरादित्य के साथ अपने राज्य की सीमा उत्तर में हिमालय (कश्मिर) दक्षिण में मलय (केरल), पश्चिम में द्वारका तथा पूर्व में बंगाल तक विस्तारित की थी (अवंतिका शिलालेख). पी.टी. श्रीनिवास अयंगार, भोज का राज्य गोदावरी तथा यमुना तक तथा डी. सी. गांगुली, भोज का राज्य उत्तर में बांसवाडा, डुंगुरपुर तक, दक्षिण में गोदावरी तक तथा पश्चिम में कैरा जिलेतक विस्तुत मानते हैं। डॉ. दशरथ शर्मा अनुसार गुजरात का अहमदाबाद तक का भाग, मालवा, बहुतांश राजस्थान, मध्यभारत का अधिकांश भाग, बस्तर भाग तथा महाराष्ट्र के कोंकण, खानदेश और विदर्भ उसके साम्राज्य में सम्मिलित था। अतः भोज सार्वभौम राजा था। मालवचक्रवर्ती बन चुका था। उसने अनेक छोटे–बड़े राजाओंको पराजित कर अपने राज्यक्षेत्र की सीमाओं में वृद्धि की थी। परिणाम स्वरुप भोज ने अपने पैतृक राज्य के रुप में केवल मालवा प्राप्त किया था जिसे उसने विशाल साम्राज्य में परिवर्तित कर दिया। वह ८४ सामंतों (मांडलिक राजाओं) का स्वामी था। उसने ८४ उपाधियाँ ग्रहण की थी। ८४ ग्रंथ लिखे। धार में ८४ प्रासाद, देवालय तथा चौराहे बनाए थे (श्रृंगारमंजरी कथा)।

भोज बनाम गजनबी इतिहासकारों के अनुसार राजा भोज भारत का पहला हिन्दु राजा था जिसने विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारियों को इस देश में पांव जमाने नही दिये। अफगानिस्तान के गजनबी ने जब–जब आक्रमण किया, भोज ने उसे देश की सीमाओं के बाहर खदेड़ा।

सर्वप्रथम भोज ने वर्ष १००८ ई. में, लाहौर के नृपति शाही आनंदपाल को सुल्तान महमूद गजनवी के आक्रमण का मुकाबला करने अपनी सेना भेजी। इसी तरह उसके पुत्र त्रिलोकपाल जो वर्ष १०१९–२० ई. में लाहौर का शासक था उसे भी अपनी सेना भेजी एवमब भोज ने गजनवी के आक्रमणों को नाकामयाब किया (धार गजेटियर).

गर्दीजी कृत "जैनुल अखबार" के विवरण अनुसार वर्ष १०२४–१०२६ ई. में महमूद गजनवी ने भारत पर दोबारा आक्रमण किया। वह जैलसमेर, मारवाड, गुजरात मार्ग से आगे बढ़ा। गुजरात के चालुक्य नरेश भीम प्रथम की सेना गजनवी के सैन्यबल के सामने टिक न सकी और उसने सोमनाथ मंदिर की तोड़ फोड़ कर खुब लूट–पाट मचायी। किन्तु राजा भोज की विशाल सेना की खबर सुनते ही वह सिंध के रास्ते रेगिस्थान होते हुए वापस अफगानिस्थान लौट गया। उसे वापसी में अपनी सेना एवमब पशुओं की भारी प्राणहानि झेलनी पड़ी। राजा भोज ने सोमनाथ मंदिर की मरम्मत करवाई।

लूअर्ड तथा लेले कृत "दी परमाराज ऑफ धार एन्ड मांडू" में जानकारी दृष्टित होती हैं कि राजा भोज ने मूहमद गजनवी के आक्रमणों का मुकाबला करने के उद्देश्य से हिंदू राजाओं का एक सशक्त संघ बनाया था जिस में कलचुरी नरेश लक्ष्मीकर्मा तथा चौहान आदि राजपूत वंशी नृपतिगन सम्मिलित थे। "फरिश्ता" में इस संघ की संयुक्त सेना में अजमेर, कनौज, कालिंजर, लाहौर आदि राज्यों की सेनाओं के सम्मिलित होने की पुष्टि की है ताकि लाहौर नरेश जयपाल आक्रमणकारी गजनबी को लोहा दे सके ।

ए. इं. खंड ३, पृष्ठ ४६ पर उल्लेख मिलता है कि जब महमूद गजनबी के पुत्र मलिक सलाल मसूद ने सन १०४३ ई. में लाहौर पर आक्रमण किया तब राजा भोज के नेतृत्व में हिंदू राजाओं की संयुक्त सेना ने बहराइच के मैदानपर एक माह तक घनघोर युद्ध किया और उसे वापस भगाया । तपश्चात संयुक्त सेना ने हांसी, थानेश्वर, नागरकोट आदि के किलों को मुसलमानों

से आजाद किया। गजनबी के सेनापति तोग्गल से लाहौर का किला मुक्त कराने के लिये भोज ने लगातार सात माह तक युद्ध कर अंत में जीत हासिल की।

भोज का महान व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व श्रृंगारमंजरीकथा में भोज ने अपने व्यक्तित्व का परिचय दिया है– भोज सुवर्णमय कांतीवाला, उँचा, भीमभूजाधारी, अतिसुंदर चेहरा, ऊँचा माथा, विशाल वक्षवाला महापराक्रमी आकर्षक व्यक्तित्व का धनी था –

कनककांतिच्छुरितम रकतप्रभाभिरामदेहः। निजभुजोघालितदुर्मदरिपु। सतताविष्कृत सुदर्शनोपि दुर्दशनः लावण्यपीयुसलिलाः । हराट्टहास इव विशादकांतिसम्पदः अभूत प्रसवभूमि।

अर्थात–मरकत की सुवर्णप्रभा मिश्रित गेहुँए वर्ण का शरीर, अपरिमित शक्तिवाली भुजाएँ जो दुष्मनोंको भयभीत करें, तथा उसकी आकर्षक शरीर आकृति पर हरदम विलासीनियाँ मुग्ध रहती थी। भोज ऋतु अनुरुप विविध पुष्पों का लेपन करता था। उसकी धर्म में अटुट श्रद्धा थी। वह महिला एवं बच्चोंपर कभी भी शस्त्र नही चलता था। शरणागती आये हुए दुश्मनोंको आश्रय प्रदान करता था। वह परस्त्रियों का सम्मान करता था तथा कामिनियों से सदा दूर रहता था। वह शिव, जगनारायण, सरस्वती तथा काली माँ का उपासक था।

वह धनुर्विद्या, असिधेनु (लम्बा चाकू या छुरी) कृपाण तथा तलवार चलाने में निपुन था। उसने मरखड्गशतम्फ लिखा था। भोज उन्मत्त हाथी को वस में करने की विद्या जानता था। वह हस्तिलक्षणों, अश्वगुणों तथा उनकी चिकित्सा का ज्ञाता था (युक्तिकल्पतरु, शालिहोत्र, कोदण्ड काव्य)। भोजदेवकृत युक्तिकल्पतरू ग्रंथ अनुसार उसके तीन प्रकार के सेनादल थे, पैदल सेना, अश्वसेना तथा हस्ती सेना। यश्च प्रभवो धर्मस्य, आश्रयः सत्यस्य, कुलगृहं कलानामब क्षेतं क्षत्राचारस्य, प्रमोदोद्यानं, विद्यालतानामब, निधानं नीतेः, जीवितं शौर्यस्य, वसतिर्विलासानामब,

आकरः करुणायाः, बान्धवो वैदग्ध्यस्य....... रसस्य, धौरेयो धनुर्धराणाम, अग्रणी गुणवतामब । श्रृ.म .क.पृ.९

स्वयं भोज में धर्म, सत्य, कला, क्षत्राचार, विविध विद्या, नीति, शौर्य, विलास, करुणा, विद्धता, रसिकता, धनुर्धरता, इ. विविध गुणोंका समाहार था। भोज उदार, शालीन एवं परिष्कृत मनोवृत्तिका आदर्श नरेश था। भारतीय आदर्शों का वह प्रतीक था। उसने इन्ही गुणोंसे लोकमानस में विपुल रुप से प्रतिष्ठा पाई।

भोज सम्राट अशोक जैसा सदाचारी तथा सम्राट समुद्रगुप्त जैसा साहित्यिक एवमब सम्राट विक्रमादित्य जैसा शूरवीर एवमब न्यायी राजा था जो सदा अपनी प्रजा के सुख–समृद्धि के लिए समर्पित था। इस प्रकार भोज में विविध गुणों का समाहार था। वह गुणवानों में अग्रणी था। राजा भोज के शासन काल में मालवा अति श्री संपन्न था। वह कविराज ममालवा चक्रवर्तिन्फ कहलाता था तथा इन्हें हम हिंदू भारत के महानतमब नरेशों के पंक्तियों में रख सकते हैं। मालवमणि भोज के स्वर्गवास पर श्री. बल्लाल पंडित ने लिखा है:–

अद्य धारा निराधारा, निरालम्बा सरस्वती, पंडिताः खंडिताः सर्वे, भोजराजे दिवंगते ।

एक किंवदंति के अनुसार कवि कालीदास (भोज के दरबार का महाकवि पं. छित्रप) नाराज होकर धार से कहीं चले गये तथा जब उनका पता न चला तब भोज ने अपने को मृतक घोषित कर दिया जिससे कालीदास वापिस आ जावे। इस मृत्यु का समाचार सुनते ही कालीदास ने उक्त श्लोक कहा था तथा जब धार में आये तब उनने पाया कि राजा भोज जीवित हैं तथा उन्होंने भोज की प्रशंसा करते हुए यह श्लोक कहा किः– अद्य धारा, सदा धारा, सदा लम्बा सरस्वती। पंडिताः मंडिताः सर्वे, भोजराजे भुवंगते ।।

भोज सारे राज्यशास्त्र, ३६ आयुधविज्ञान, ७२ कलाओं में पारंगत था (प्रबंध चिंतामणी, रासमाला)। भोज की विभिन्न कला तथा वैज्ञानिक ज्ञान का पांडित्य युक्तिकल्पतरु,

सुत्रधार (वास्तुकला, विज्ञान, अभियांत्रिकी, शिल्पकला), १०. युक्तिकल्पतरू (राजनीतिशास्त्र) ११. श्रृंगार मंजरी (कथा संग्रह), १२. प्रबंध चिंतामणी (इतिहास), १३. चम्पु रामायण (रामायण टीका), १४. वाग्देवी स्तुति (सरस्वती गायन), १५. कूर्मशतक–काव्य १०० श्लोकीय १६. गीत प्रकाश (संगीतशास्त्र), १७. न्यायवार्तिक (न्यायशास्त्र), १८. राजमार्तण्ड (वेदांत, दर्शनशास्त्र) १९. कामधेनु धर्मप्रदीप (धर्मशास्त्र), २०. रत्नमाला (सुभाषित), इत्यादी।

भोज करीबन १४०० विद्वानों का आश्रयदाता था। कोदण्डकाव्य तथा अज्ञातनामा काव्य में भोज की विद्वत परिषद की जानकारी है जिस में विविध विषयों के ५०० विद्वान थे। विभिन्न प्रश्न/समस्याओंपर अभिमत, न्यायसंगत, तर्कसंगत निष्कर्ष पाने हेतु इन विद्वानों का मत लिया जाता थ। कोई भी नागरिक निर्भिक होकर न्याय का हकदार था। भोज स्वयं भेष बदलकर राज्य में घुमता था। वर्षभर गोष्ठियाँ, परिसंवाद, संगीत, नाटक राज्याश्रय से चलते थे।

भोज ने धार में "भोजशाला" या "सरस्वती सदन" नामक विश्वविद्यालय तथा उज्जैन और मांडु में विद्यालय खोले थे। यहांपर देश–विदेश के छात्र शिक्षा ग्रहण करते थे। भोज का प्रधानमंत्री रोहक तथा मंत्री–बुद्धिसागर दोनों विद्वान थे। उसका राजपुरोहित–चंद्रशेखर दीक्षित था। भोज के राजदरबार में महाकवि चक्रवर्तीन पंडित छित्तप इतना विद्वान था कि उसे 'कालिदास' उपाधि से अलंकृत किया गया था। भोज के अन्य राजकवियों में नयनंदि, दशवल आदि थे। संक्षिप्त में भोज ब्रह्मक्षत्रि राजा था जो वीर एवं पंडित भी था। भोज के दरबार में कालिदास, वररूचि, सुबंधु, बाणा, अमर, रामदेव, हरिवंश, शंकर, कलिंग, कर्पूर, विनायक, मदन, विधाविनोद, कोकिल, तारेंद्र, राजशेखर, नाथ, धनपाल, सीना, पंडित मयुर, कवि माघ, मानतुंग आदि विद्वान थे (प्रबंध चिंतामणी, भोज प्रबन्ध)।

भोज ने रामेश्वर, सोमनाथ, केदारनाथ, महाकालेश्वर, रूद्र के मंदीरों का जीर्णोद्वार किया था। उसने काश्मीर का पाप सूदन कपटेश्वर कुंड व भोपाल की भोजपुरी झील व भोजपुर का शिव मंदीर भी बनाया था। धार की लाट–मसजिद भोज के राजदरबार का परिवर्तित के लिये उपयोग बताया है ताकि आसमान में वायुयान को लेसर किरणे क्षति न पहुंचा सके। इसी तरह इंधन के रूप में पारा (मरकूरी) इस्तेमाल करने का जिक्र किया गया है। भोज प्रबन्ध में एक श्लोक है–कि वायुयान की विशेषता यह थी कि–

घटयेकयाक्रोशदशैकमखः सुकृत्रियो गच्छति। वायुददाति व्यजनं सुपुष्कलं दिना मनुष्येण चलायजस्त्रय ।।

अर्थात–एक घड़ी में ११ कोस भूमि व अन्तरिक्ष में चलता था। पंखा बिना मनुष्य के चलाये निरंतर चलता था। राजा भोज द्वारा दी गई वायुयान शास्त्र की जानकारी के आधारपर मुम्बई निवासी कै. शिवशंकर बापूजी तळपदे ने वर्ष १८९५ में एक वायुयान का निर्माण किया और उसे "मरूत्सखा" नाम दिया। इस वायुयान (हवाई जहाज) को स्वयमब वैमानिक बनकर करीब १५०० फीट ऊँचाई तक उड़ाया। तत्कालिन मुम्बईवासीयों ने उनकी इस असाधारण उपलब्धि की सराहना की और बड़ोदा नरेश ने उन्हे पुरस्कृत कर सम्मानित किया था ऐसा विवरण बड़ोदा राजघराने के तत्कालिन रेकॉर्ड में मिलता है। किन्तु ब्रिटिश शासनकर्ताओं ने कै. शिवशंकर तळपदे के इस अलौकिक उपलब्धि की अनदेखी की एवमब मात्र ८ वर्षों बाद इ.स. १९०३ मं पहला वायुयान उड़ाने का सेहरा राईट बन्धुओं के सिर मढ़ दिया।

भोज की मृत्यू–गांगेयदेव के पुत्र कर्णदेव ने चालुक्य राजा भीम के साथ मिलकर ई.स. १०५५ में मालवा पर आक्रमण किया। धारानगरी शत्रुओं ने लुट ली। भोज वृद्ध हो चुका था और घातक बिमारी से रुग्ण था। इस दौरान में उसकी मृत्यु आषाढ़ वदी १३, संवत १११२ (१०५५ ई.) को हुई। मालवा उजड़ गया। इस तरह महान सम्राट भोज का जीवनकाल आयुकी ७५–७६ वर्ष में समाप्त हुआ। भोज के राजकवि दशवल कृत "चिंतामणी सार्णिका" अनुसार भोज ने मालवापर १००० से १०५५ ई. तक लगातार ५५ वर्ष, ७ मास, ३ दिन तक गौरव–गरिमा के साथ राज्य किया। कुछ इतिहासकार भोज का राज्यकाल १०१० से १०५० ई. मानते है। अतः पंवार वंश की पताका लहराकर राजा भोज देदीप्यमान आदर्श हिंदु राजा के रूप में भारतीय इतिहास में अजरामर हुआ।

डॉ.ज्ञानेश्वर टेंभरे,
नागपूर

स्वामीत्व, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक खेमेंद्र हिरदीलाल कटरे यांनी बेरार टाईम्स हे साप्ताहिक वृत्तपत्र अंगपाल पारधी, लोकजन प्रकाशन, लोकजन भवन, स्नेह नगर, तकिया वॉर्ड, भंडारा ता.जि.भंडारा येथे मुद्रीत करुन डोलारे एजन्सीसमोरील रस्ता,शिवनगर गोंदिया येथे प्रकाशित केले. संपादक खेमेंद्र हिरदीलाल कटरे, भ्रमणध्वनी क्र. ८०८०८१५३२९ (पी.आर.बी. कायद्यानुसार जबाबदारी संपादकावर राहील) प्रसिद्ध झालेल्या मजकुराशी संपादक व प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही. (गोंदिया न्यायकक्षेत)

राजाभोज जन्मोत्सव २२ वो स्नेह सम्मेलन संगम समिति पुणे

पुणे :- क्षत्रीय पोवार समाज संगम समिती कर ल ?पुणा मा १ फरवरी ला एस के एफ हाल पिपंरी चिंचवड़ पुणे मा आयोजित करी सेन येव कार्यक्रम राजाभोज जन्मोत्सव ला २२ साल पुरा भया म्हणुन राजाभोज जन्म ोत्सव बहुत धुमधाम ल मनाय रया सेजन पुणा का क्षत्रीय पोवार समाज का पदाधिकारी व समाज का लहान मोठा आई बाबूजी काका मामा सब झन राजाभोज को जन्मोत्सव मा १ फरवरी ला अवश्य आवो.कार्यक्रम की शुरुआत सकाडी ११ बजे ला शुरूवात होये. राजा भोज की आरती व पूजापाठ ल कार्यक्रम

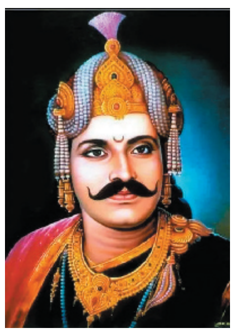

की शुरुआत होये.कार्यक्रम सम्मानिय पोवार समाज को आदर सम्मान होये.समाज का पदाधिकारी आप आपला विचार व पोवार समाज की परंपरा को बारे मा सांगेत,व आपली पोवारी भाषा,आपली रिति रिवाज, आपला संस्कार, संस्कृति को बारे मा सांगेत व आपलो जिवन की काही विशेष बात व आप-पलो जिवन की संघर्ष गाथा व राजाभोज को इतिहास जो अज को पिढी ला मालुम नाहाय की राजाभोज कोण होता. अशी बहुत सी बात पर बातचित होये त बहुत काही आपलो ला मालुम होये.

लेकिन पुरा पोवार समाज १ फरवरी अवश्य आवो.येन कार्यक्रम मा चांगलो काम साठी सम्मान,लहान बच्चा साठी चित्रकला, रांगोली, को भी कार्यक्रम से कार्यक्रम को बाद मा चाय, नाश्ता,व भोजन ,जेवन की भी व्यवस्था से क्षत्रीय पोवार समाज संगम समिती कर ल सब ला निमंत्रण से की १ फरवरी ला एस के एफ हांल मा अवश्य आवो.

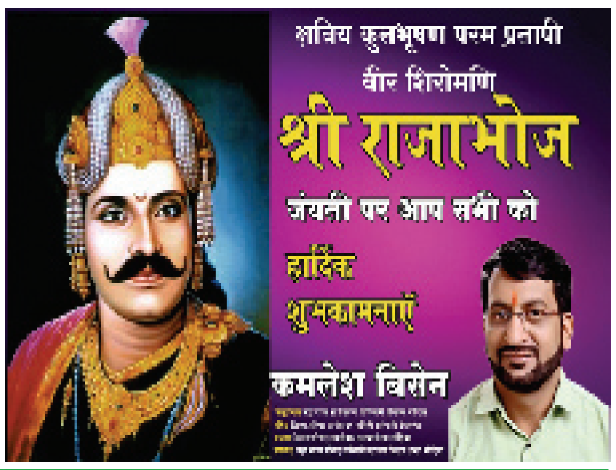

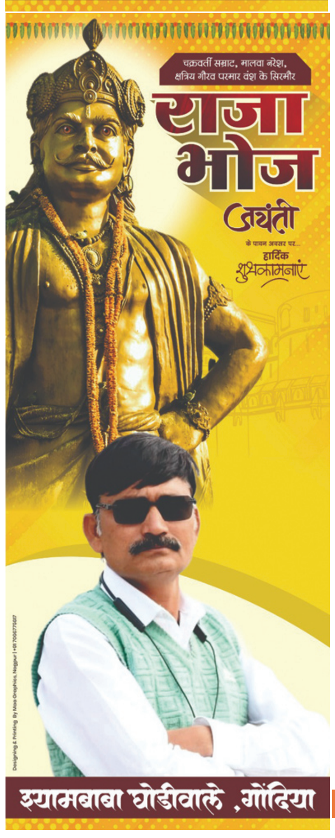

राजाभोज जयंती महोत्सव की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं!